'अप्प दीपो भव'

वॉयस ऑफ बुद्धा

Postal Reg. No.-DL(ND)-11/6144/2019-20-21
WPP Licence No.- U(C)-101/2019-2021
R.N.I. No. 68180/98

Date of Publication : 31.05.2019
Date of Posting on concessional rate :
2-3 & 16-17 of each fortnight

मूल्य : पाँच रूपये

प्रकाशक : डॉ. उदित राज, चेयरमैन - जस्टिस पब्लिकेशंस, टी-22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001, फोन : 011-23354841-42

Website : www.aiparisangh.com **E-mail: parisangh1997@gmail.com**

● वर्ष : 22 ● अंक 11 ● पाक्षिक ● द्विभाषी ● कुल पृष्ठ संख्या 8 ● 16 से 31 मई, 2019

साझी विरासत तो साझी सरकार

डॉ. उदित राज

आम जनता की समझ बन गयी है कि जिस किसी पार्टी की सरकार बने वह बहुमत की हो। लोग भूल जाते हैं कि भारत में एक पहचान से कहीं ज्यादा भिन्नता है। जब संविधान निर्माण हो रहा था तो इस पहलू पर बहुत विचार किया गया था कि हमारी सरकार संघीय हो या एकल प्रणाली। भारी चर्चा के बाद निष्कर्ष पर पहुंचा गया कि भारत विभिन्नताओं का देश है, इसलिए यहां एकल सरकार उपयुक्त नहीं होगी। विभिन्न भाषाएं, जातियां, रीति-रिवाज, खान-पान एवं सोच जिस देश में हो तो वहां पर संसदीय प्रणाली ही उचित होगी। समयांतराल हमारी संसद का भी स्वरूप बदलता जा रहा है। इस बार भी जनता ने एक पार्टी को प्रचंड बहुमत दिया और एक कारण यह भी था कि जनता ने सोचा कि बहुमत की सरकार निर्णय आसानी से ले सकती है। लोग सोच नहीं पाए कि उनका फायदा किसमें है? बस, सोच बन गयी कि स्थायी और मजबूत सरकार और नेतृत्व को ही चुनना है।

परिस्थिति के अनुसार सच्चाई को स्वीकार करने की आदत डालनी पड़ेगी बजाय प्रचार में गुमराह होने के। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी का यह भी प्रचार था कि उसे बहुमत मिले अर्थात् संयुक्त सरकार देश के लिए ठीक नहीं है। तर्क यह दिया जाता है कि साझा सरकार के होते हुए किसी नीति को बनाने में अड़चने आती हैं। प्रथमदृष्ट्या यह बात सच लगती है, लेकिन अनुभव बताते हैं कि जब भी साझा सरकार रही, जनता के हित में ज्यादा कार्य हुए। 5 साल की मोदी जी की सरकार में भयंकर गलतियां होती रहीं, लेकिन किसी की हिम्मत नहीं हुई कि उंगली उठा सके और इसका परिणाम देश को भुगतना पड़ा आगे भी ऐसी संभावनाएं हैं। साझा सरकार में क्या यह संभव था कि 8:30 बजे रात्रि टेलीविजन पर आकर प्रधानमंत्री घोषणा कर दें कि 1000 और 500 के नोट अमान्य हो गए। सोचने पर लगता है कि इतना क्रूर फैसला कैसे कोई कर सकता है? रोजगार विहीन देश बन गया और कभी आवाज नहीं उठी। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तेल सस्ता हुआ और हमारे यहां डीजल व पेट्रोल के दाम बेतहाशा बढ़े। डालर के मुकाबले में रूपये की हालत बेहाल हुई। इस तरह से तमाम जनविरोधी फैसले होते रहे लेकिन कभी चर्चा नहीं हुई।

डॉ. मनमोहन सिंह की 10 साल की साझा सरकार भी मोदी जी की सरकार से बेहतर रही। उनकी सरकार पर दो बड़े आरोप लगे, पहला कोयला घोटाला और दूसरा टू-जी, लेकिन मोदी जी की सरकार ने उन भ्रष्टाचारियों को सजा क्यों नहीं दिया? हालत यह है कि सी.बी.आई. जो सरकार के अधीन है, उसी ने टू-जी घोटाले में सभी को बरी कर दिया और कोयले के घोटाले में अभी तक कोई

गिरफ्तार नहीं हुआ। जिस तरह से प्रचार-प्रसार की आंधी बह रही थी, ऐसी तर्कशील बातें समझ में नहीं आयीं। साझा सरकार में यह कदापि संभव नहीं था। वाजपेयी जी की सरकार देखो कि एक पार्टी की बहुमत की सरकार नहीं थी, उनका भी अच्छा कार्य रहा। देश की प्रमुख संस्थाएं - सी.बी.आई., आयकर, ई.डी., सी.वी. सी. एवं अन्य एजेंसियां पांव तले दबा दी गयीं। कभी भी सी.वी.आई. जैसी संस्था में अधिकारियों का इतना राजनीतिकरण नहीं हुआ। सुप्रीम कोर्ट के जजों द्वारा प्रेसवार्ता करना कि उनके ऊपर दबाव है, इतिहास में नहीं हुआ।

प्रधानमंत्री, मंत्रिमंडल का प्रधान होता है न कि ये सभी मंत्रालयों का निर्णय स्वयं करें। सैकड़ों अधिकारी प्रधानमंत्री कार्यालय में नियुक्त इस बात के लिए हैं कि प्रत्येक मंत्रालय का मुख्य फैसला पी.एम.ओ. से ही होगा। सांसद तो जैसे कुछ रहे ही नहीं और न ही कुछ बदलाव की स्थिति होने वाली है। इस तरह से मंत्री और सांसद अधिकार विहीन हो गए और आगे भी रहेगें। कई मंत्रियों को तो पता ही नहीं होता था कि उनके मंत्रालय में हो क्या रहा है? वे केवल दफ्तर में आ जाते थे और बिना कुछ किए चले जाना और यह दैनिक स्तर पर होता रहा है। सरकार की जितनी संसदीय समितियां हैं, वे भी निष्प्रभावी हो गयीं। मैं स्वयं समितियों में सदस्य रहा और एक समय के बाद ऐसा महसूस हुआ कि इन समितियों का क्या औचित्य है? जो लोग कहते हैं कि भ्रष्टाचार नहीं हुआ, तो यह कहा जा सकता है कि अन्य सरकारों से कहीं ज्यादा भ्रष्टाचार हुआ। भ्रष्टाचार का स्वरूप जरूर बदल गया। भ्रष्टाचार का केन्द्रीकरण हुआ और रिश्वतखोरी अधिकारी स्तर पर कई गुना अधिक हुआ। नेता अगर घूस लेता है तो बात दूर तक जाती है और जब अधिकारी और जज लेते हैं तो बात नहीं फैलती, क्योंकि इनकी जिंदगी सार्वजनिक नहीं होती।

यह अच्छा होता कि साझे की सरकार इस बार बनती। जनता को खुश होना चाहिए कि उन्हें पूर्व में मजबूर सरकारें मिली हैं न कि मजबूत। भारत का समाज अभी इतना परिपक्व नहीं है, इसलिए वह दुष्प्रचार में फंस जाती है, जैसे कि हो रहा है। सत्ता का जितना विकेन्द्रीकरण हो, उतना ही देश और जनता के लिए अच्छी बात है। अगर मध्यावधि चुनाव भी हों तो कोई हर्ज नहीं है लेकिन चुनाव आयोग अगर किसी के दबाव में चुनाव कराने की अवधि लंबी न करे। इस बार लोक सभा का चुनाव 7 चरणों में था, जो बिल्कुल जरूरी नहीं था। लगभग 3 महीने तक सरकारी काम-काज ठप थे और इतने दिनों तक चुनाव में रहने से धन की बर्बादी भी दुगनी हो चुकी होगी। समय और धन का व्यय आधा हो सकता था। जहां तक बहुजन राजनीति की बात है, उनके लिए बार-बार चुनाव फायदेमंद है, जैसा कांशीराम जी भी कहा करते थे। जापान में साझा ही सरकार चलती है और मध्यावधि चुनाव भी होते हैं, लेकिन वहां के विकास पर कोई प्रतिकूल असर नहीं पड़ा। यह भी बात सच है कि किसी एक पार्टी की बहुमत की सरकार हो, लेकिन नेतृत्व उसका जनवादी हो। अगर ऐसा नहीं है तो साझा सरकार कहीं बेहतर है।

परिसंघ का राष्ट्रीय सम्मेलन 6 व 7 जुलाई को दिल्ली में

06 और 07 जुलाई, 2019 को मावलंकर हॉल, कांस्टीट्यूशन क्लब, नजदीक पटेल चौक मेट्रो, नई दिल्ली में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इसमें पूरे देश के परिसंघ के पदाधिकारियों, सदस्यों कार्यकर्त्ताओ व शुभचिंतकों सहित बुद्धिजीवियों को आमंत्रित किया जा रहा है। इस सम्मेलन में विचार किया जायेगा कि आरक्षण पर आए संकट से कैसे निपटा जाए। आरक्षण समाप्ति की ओर है तो निजी क्षेत्र में किस तरह से आरक्षण लागू कराया जाए। इसके अलावा दलितों पर आए दिन होने वाले भेदभाव व अत्याचार की समस्या से कैसे निपटा जाए, आदि मुख्य विषय हैं। इसलिए आप दो दिवसीय सम्मेलन में साथियों के साथ आएं और बैठकर चर्चा में भाग लें। कोई न कोई रास्ता तो निकालना पड़ेगा। हम महसूस करते है कि इस समय दलित व पिछड़ा समाज अंधकार में पड़ा है, और उसके अधिकारों पर कुठाराधात हो रहा है। जहां भी मैं जाता हूं सुनने को मिलता है कि आरक्षण खत्म हो रहा है, सिर्फ कागजों में रह गया है, वास्तव में समाप्त हो जायेगा, यदि अब भी समाज घर से बाहर निकल कर आन्दोलन नहीं करेगा तो ये भ्रांतियां हैं कि राजनीतिक सत्ता जब तक न मिले तब तक तो अधिकार नहीं मिल सकते। बाबा साहेब को कोई राजनीतिक सत्ता नहीं मिली थी फिर भी आरक्षण जैसे अधिकार सुनिश्चित कराए। गुर्जर जाट, पटेल और मराठा आदि ने भी सामाजिक आन्दोलन के जरिये आरक्षण लिया है, हम भी समाजिक आन्दोलन के जरिये पहले भी आरक्षण बचाए और आगे भी बचाते रहेंगे।

इस सम्मेलन में हॉल इत्यादि की बुकिंग, खाना की व्यवस्था आदि करने के लिए 500 रू. प्रति व्यक्ति सहयोग राशि के रूप में रखी गयी है। कृपया आने की अग्रिम सूचना(**https://bit.ly/2Dn1Dm0** पर फॉर्म भर कर अथवा राष्ट्रीय कार्यालय में श्री सुमित मो. 9868978306 या अंकित कुमार मो. 787720495 को फोन करके) दे। सम्मेलन से संबंधित हैंडबिल पेज 4 पर हिंदी में एवं पेज 5 पर अंग्रेजी में छापा जा रहा है, उसे अवश्य पढ़े और अन्य साथियों को भी पढ़ाएं।

- डॉ. उदित राज, राष्ट्रीय अध्यक्ष, परिसंघ

''बाबा साहब ने मुझे बिना सिंदूर के जीने की ताकत दी है''

मनीषा बडगुजर

बनारस के किसी गाँव में दलित स्त्रियों और दलित जनसमूह के बीच किसी दलित सामाजिक कार्यकर्ता के द्वारा दिये गये भाषण का यह एक हिस्सा है। स्थानीय जनता की भाषा में, सरलता से दिया गया यह भाषण आंबेडकरवादी स्त्री की आचार संहिता को स्पष्ट करता है। धर्म और अंधविश्वास से मुक्त स्त्री ही एक आंबेडकरवादी स्त्री हो सकती है।

बहनों, हम अंधविश्वास के जिस जाल में फंसे हैं, वह हमारी गुलामी का एक फंदा है, जिससे मुक्त हुए बिना हम बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर के दिखाये रास्ते पर चलकर मुक्त नहीं हो सकते। कभी काले रंग का धागा, कभी लाल रंग का धागा– माता लोगों से पूछो तो कहती हैं, 'नजर से बचाए खातिर बाँध लई हैं,'। लड़कों से पूछो तो जवाब आता है, 'अरे ! फैशन में पहने हैं।' कल सलीमपुर गाँव में गये, तो वहां पर मैंने एक बच्चे से पूछा तुम हाथ में ये काला धागा बांधे हुए हो, क्यों बांधे हो? तो वह कहता है कि ये त्रिलोकीनाथ का धागा है। मैंने कहा, 'अच्छा त्रिलोकीनाथ! कौन है त्रिलोकीनाथ?' बोला, 'तीन लोक के मालिक और चौदह भुवन के मालिक का धागा एक पतला–सा! मैंने कहा, 'त्रिलोकीनाथ ई नहीं कहे कि कितना पढ़े हो? उसने कहा, 'हाईस्कूल पढ़ के छोड़ दिए।' मैंने पूछा, 'त्रिलोकीनाथ ई नहीं कहे कि तीन लोक के हम मालिक हैं तो तुम एक लोक के मालिक तो हो जाओ, कम से कम पढ़ लिख के,' तो चुप ! आप अपने बच्चों को बता ही नहीं रहे कि इस धागे में शक्ति है कि बाबा साहब की बनाई हुई कलम में शक्ति है, उनके दिए अधिकार में शक्ति है। आप ये जान लीजिये कि हमारे और आपके लिए चमार जाति में पैदा हुआ उसकी क्या नजरा रे भईया!'

इस काले रंग के धागे में ब्राह्मण ने हमारे गले में हड्डी टांग रखी थी। ये आजादी के बाद की बात हम बता रहे हैं, इसी काले रंग के धागे में घंटी बंधी थी, पैर में काले धागे में घुंघरू बाँध रखा था। जानते हैं क्यों, क्योंकि हम अछूत थे और ये अछूत की निशानी थी कि जब हम सड़क पर चलें तो घंटी और घुंघरू की आवाज होए और ये पता चल जाये कि इधर से अछूत आ रहा है और हम लोगों (ब्राह्मण) को सावधान हो जाना चाहिए, हमारी परछाई भी उनके ऊपर पड़ जाये तो उन्हें घर जाकर नहाना पड़े। हमारे गले में मटका टंगा हुआ था कि हम थूंके तो मटका में थूंके, हमें सड़क पे थूकने का अधिकार नहीं था। कमर में हमारे झाड़ू लगी हुई थी कि हम जब चलें पाछे–पाछे हमार पैर का निशान जोन है कि मिटत चले, का है कि कौनो ब्राह्मण का पैर पड़ जाई तो ओके फिर से नहाई के पड़ी। आपको लगता है कि आपको ये सारे अधिकार ऐसे ही मिल गए हैं। बाबा साहब ने संघर्ष किया था, बाबा साहब ने संविधान में लिखा था इसलिए ब्राह्मणों ने हमारे गले से घंटी उतरवाई, पैरों से धागा उतरवाया। ये आपकी गुलामी का धागा था, इस धागे को तोड़कर फेंक दीजिये। ब्राह्मण जैसे ही इस काले धागे को आपके गले में देखता है, और आपसे आपकी जाति केवल पूछ देता है तो यह लगता है कि सौ फीट नीचे जमीन में चले गये हैं। जाति पूछ लिया कैसे बताएं कि चमार जाति के हैं, कैसे बताएं!

मैं एक ऊंचे पद पर हूँ फिर भी हमारी जाति कभी नहीं बदलती। 7 महीने मुझे नौकरी करते हुए हुआ था। कुछ महीनों के अंदर इन ब्राह्मणों ने मेरे कमरे का ताला तोड़कर मेरा सामान बाहर फेंक दिया था। जानते हैं क्यों? क्योंकि मैं चमार औरत थी और उसके साथ–साथ मैं ऐसी ही जागरूकता का कार्यक्रम वहां चला रही थी, उन्होंने सोचा, इसको सबक सिखाना चाहिए, मेरी जाति नहीं बदली रात भर मैं सड़क पर रही, शादी भी नहीं हुई थी तब–सड़क पर रहे। अगले दिन हमने अख़बार में निकलवाया, एफ.आई.आर. दर्ज करवाई, लेकिन उस एक रात जो मैंने सड़क पर बिताई तब मुझे एहसास हुआ कि मेरे समाज में मेरे जैसी पढ़ी–लिखी लड़की के साथ ऐसा हो सकता है, तो मेरे समाज के साथ कैसा हो सकता होगा। तब मैंने कहा कि मेरी जरुरत वहां नहीं है। मेरी जरुरत आप लोगों के बीच में है। तब हम निकलकर के आप लोगों के बीच में आये। मैं आपको बताऊँ डिपार्टमेंट में एक बार एक पंडित जी, त्रिवेदी जी आये रहे। जब परिचय की बात आई तो हम अकेले चमार। हमारे विभाग के चीफ ने परिचय दिया कि, 'ये हमारे विभाग में नई–नई आई हैं, इनका नाम है। वे मेरे सरनेम से मुझे पहचान नहीं पाये, अंदाज लगाने लगे तो मैंने कहा, 'क्या है कि आप मुझसे जाति पूछने की कोशिश कर रहे हैं क्या?' वह तुरंत सकपका गया, नहीं– नहीं मैडम मैं आपकी जाति नहीं पूछ रहा। मैंने कहा, 'नहीं सर आप लोग बोलते हो न कि औरतों की कोई जाति नहीं होती, बोल देते हो न। मैंने उनसे कहा कि भैया मेरी माई जो हैं, वो पंडिताईन रही और बाप जो है वो चमार रहै। ये ब्राह्मण लोग इतने धूर्त इतने चालाक रहे कि जो लड़का ठीक–ठाक रहने वाले रहे चाहे वो चमार जाति का क्यों न हो अपनी लड़किया को टांग देते हैं साथ में। वैसे ही ब्राह्मण रहे हमारे नाना वो टांग दिए अपनी लड़किया, हमार माई को हमार पिताजी के संगे। अब तुम बताओ हमार कौन बिरादरी है सर! ते एकदम चुप, कौनो जवाब नाय है ओकरे पास। ई मजबूती आपको अपने बच्चों में लानी है। ये मजबूती नहीं लानी है कि किसी ने जाति पूछ दी तो 100 फुट नीचे घुस जाये। ये मजबूती गले में बंधे काले रंग के धागे से नही आएगी, क्योंकि ब्राह्मण इसे देख के जनता है कि ये मेरा गुलाम है, कि हम उसके पालतू कुत्ता हैं। अपने दिमाग से इन सारे धागों का भय निकालिए। तोड़कर फेंक दीजिये, इन धागों को ये सारी निशानियां ब्राह्मणों ने औरतों पर कैसे डाली है! शादी हो रही है न बौद्ध धर्म से शादी हुई कि हिन्दू धर्म से शादी हुई! हिन्दू धर्म से हुई, अच्छा चलिए 3. तो मैं आपको बताऊँ मेरी शादी भगवान बुद्ध को साक्षी मानकर हुई, बाबा साहब को साक्षी मानकर हुई और हमारी शादी जब बुद्ध को साक्षी मानकर होती है तो उसमें औरत और आदमी को एक बराबर अधिकार होता है। भगवान बुद्ध बताते हैं कि औरत आदमी एक बराबर। सिन्दूर अगर औरत को दिया जाता है तो आदमी की भी तो शादी होती है, इसको क्यों नहीं दी जाती! बड़ी हंसी आती है, इस बात पे लेकिन सही बात ये है कि बिछिया अगर औरत को पहनाई जाती है, तो आदमी को भी तो पहनाई जानी चाहिए– शादी तो दोनो जन की होती है कि नहीं, आदमी तो जैसे आता है, दूल्हा बनकर के पूरी जिंदगी ऐसे ही रहता है और हम शादी के पहले कुछ रहते हैं और शादी के बाद हमें कुछ और बना दिया जाता है, जैसे हम कोई विश्व सुन्दरी हो गये हैं– सबसे सुंदर महिला हम हो गये, ऊपर से नीचे तक इतना लदा–फदा दिया जाता है कि बेचारी दुल्हन को दो लोग एक इधर से एक उधर से पकड़कर चलते हैं, चलते हैं कि नहीं चलते हैं। कभी उतना भारी भरकम पहनी ही नहीं होती है, पकड़ के चलती हैं। तो मेरी शादी भगवान् बुद्ध को साक्षी मानकर हुई, जिसमें आदमी और औरत को एक बराबर अधिकार होता है सिन्दूर और बिछिया नहीं पहनाया जाता है, जैसे हम शादी के पहले रहे शादी के बाद भी एक–दूसरे के सहयोगी, एक दूसरे के दोस्त बनकर के जिंदगी की गाडी को आगे बढ़ाएं। अगर मेरी शादी हिन्दू धर्म के अनुसार होती तो मेरा पति तो यह कहता न कि 'का इतनी गर्मी में घूमती हो गाँव–गाँव। चला घरे चला लड़का बच्चन के पाला, रोटी बनावा हमार माई दादा के सेवा करा।'

मेरी शादी हुई, मुझे भी ज्ञान नहीं था, 'खूब गहना पहने थे– शादी होकर पहुंची ससुराल, मुंह दिखाई की रसम के समय मैंने कुल मेहरारू से प्रश्न किया, 'आप सारी तो मेरी माँ लोग हो न, भई सास हो तो आप मेरी माँ लोग हो, इस बात का जवाब दीजिये कि सर से पाँव तक जो मैंने सोना चांदी पहन रखा है ये किसकी बदौलत है। उनमें से एक उठी और बोली, 'भई तुम्हारे ससुर इंजिनियर हैं, नौकरी करत हैं, चढोले हो तो तुम पहन ले हो। हम कहे बिलकुल ठीक बात है। हम कहे अच्छा एक बात और बतावा कि हमार ससुर, जो इंजिनियर हैं, नौकरी करत हैं, यह किसके बदौलत। उनमें से एक फिर खड़ी हुई, 'अरे वो पढ़त–लिखत हैं, तो नौकरी करत हैं।' 'बिलकुल ठीक बात', हम ambedkar & womens & rights कहे, 'ई बतावा हमार ससुर पढ़–लिख कैसे पाये, फिर एक बोली, गाँव में पास में पाठशाला है न वहीं पे पढ़ लेने,'। हम कहे, 'ठीक बात है, अब एक बात और बताइए गाँव के पास के पाठशाला में हमार ससुर के पढने का अधिकार कौन दिलाये रही, तो कुल मेहरारू चुप।' लेकिन एक बच्ची थी वह उठ के खड़ी हुई और बोलती है कि 'गाँव की पाठशाला में पढने का अधिकार तो हमको बाबा साहेब ने दिलाया।'

एक बार की बात और है, बुआ सास का घर था– निरंकारी बाबा की फोटो लगी हुई थी। हम कहे जब सारा अधिकार बाबा साहेब ने दिया ये पक्का मकान जो हम बैठे है, ये नीचे जो हम टाट बिछा के सब बाबा साहब की बदौलत, तब क्यों निरंकारी बाबा की फोटो लगाये रहे?' 'अगर छुआछूत दूर हुआ है समाज से तो दिखाई भी तो देना चाहिए। आज तक हम क्यों चमरौटी में रह रहे हैं, बाबा साहब के संविधान बना होने के बावजूद हम क्यों इस चमरौटी में रह रहे हैं, ये कैसे सत्संगी लोग आप लोगों को बेवकूफ बना सकते है। आपकी मुक्ति तो इन बच्चों को पढ़ाने लिखाने में हैं, इन बच्चों को ताकतवर बनाइए कमजोर मत बनाइए। ये जो एफआईआर कराने का जो अधिकार दिया है, वो किसी निरंकारी बाबा ने नहीं बल्कि बाबा साहेब ने दिया है, तो आप खुद से सोचिये इन देवी–देवताओं ने, इन निरंकारी बाबा लोगों ने आपको क्या दिया और हमारे बाबा साहब ने क्या दिया?' एक बात और कह के अपनी बात खत्म करुँगी एक गाँव में एक ग्राम प्रधान थी, बड़ी सुंदर सी थी, हम देखे कि उसके हाथ में एक सुंदर–सा गंडा बंधा हुआ था हम पूछे कि 'ए बहनी ई का बांध लेय हो,' तो कहे, 'कुछो नाय दीदी बुखार होय गयलो तो बंधवाय रह, हमने कहा तोंके बुखार चढ़े तो तू डॉ. के पास जाना ई गंडा–ताबीज बांधे से मरज दूर होला! इन ताबीजों को इन गंडों को इन धागों को आप निकलकर फेंकिये!' अब मैं वापस आ जाती हूँ, मेरी शादी हुई मैं अपनी शादी वाली बात थोड़ी और आपको बता दूँ कि खूब गहना–वहना पहन के हम बैठे थे स्टेज पे तो हमको भंते जी बोले 'बेटा आप जो ये सोना चाँदी पहनी हैं, ये आपका असली गहना नहीं है, का है कि कोई चोर एक दिन आएगा डकैती डालेगा और सोना–चाँदी लेकर चला जायेगा, ये असली गहना नहीं है।' भंते जी बोले, 'आपकी शादी हो रही है, आपका सबसे बड़ा गहना है आपकी बुद्धि, बुद्धि से विवेक आता है, विवेक से सही–गलत की पहचान होती है, तुम्हारी बुद्धि तुम्हारा सबसे बड़ा गहना है।' भंते जी फिर बोले, 'तुम्हारा चरित्र तुम्हारा सबसे बड़ा गहना है।' भंते जी फिर बोले, 'तुम्हारा तीसरा और सबसे बड़ा गहना तुम्हारी बोली है।' भंते जी बोले, 'कोई तुम्हारे द्वार आये तो उसे एक गिलास पानी पिला दो, उसे रोटी खिला दो और प्रेम से उसका हालचाल पूछ लो यही तुम्हारा सबसे बड़ा गहना है। ये गहना तुमसे कोई चोरी नहीं कर सकता।' यही गहना लेकर मैं ससुराल गई और उसी का ये परिणाम है कि मेरे सास–ससुर ने मुझसे कहा है कि तुमको जो ज्ञान है, उससे अपने लोगों को जगाओ। मेरी शादी में सिंदूर नही लगाया गया, मुझसे कोई औरत कह सकती है कि मैं विधवा हूँ लेकिन मेरे पति तो मेरे साथ खड़े हैं, तो कह भी नहीं सकती, तो फिर क्यों किसी औरत को आप विधवा कहती हैं ? क्या है कि इस सिंदूर से आदमी की उम्र का कोई लेना देना नहीं होता है। जैसे औरतें जिनके माथे पर सिन्दूर नहीं लगा होता उन्हें मनहूस मानती हैं शुभ अवसर पर उनका होना अपशकुन मानती है, लेकिन क्यों भाई अगर कम उम्र में औरत विधवा हो जाती है, दूसरी शादी नहीं करती है कि अपने बच्चों को पालेंगे–पोसेंगे, बड़ा करेंगे शादी का समय आता है तो औरतें कहती हैं, इसकी परछाई भी नही पड़नी चाहिए। मुझे देख लीजिये और एक विधवा को देख लीजिये क्या अंतर है। बिना सिंदूर के तो वे भी रहती हैं और मैं भी रहती हूँ। अपने आपसे जो भेदभाव हम औरतों ने बना रखा है इसको खत्म कीजिये। छोड़ दीजिये पुरानी मान्यताओं को, अपना नहीं बदल सकती तो इस नई पीढ़ी को तैयार करिए, इसको आगे बढाइये अपने बच्चों को पढाईये लिखाइये

https://www.forwardpress.in/2016/12/baba-sahab-ne-mujhe-bina-sindur-ke-jine-ki-takat-di-hai/

✦✦✦

पाठकों से अपील

'वॉयस ऑफ बुद्धा' के सभी पाठकों से निवेदन है कि जिन्होंने अभी तक वार्षिक शुल्क/शुल्क जमा नहीं किया है, वे शीघ्र ही बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के नाम से टी–22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली–110001 को भेजें। शुल्क 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के खाता संख्या 0636000102165381 जो पंजाब नेशनल बैंक की जनपथ ब्रांच में है, सीधे जमा किया जा सकता है। जमा कराने के तुरंत बाद इसकी सूचना ईमेल, दूरभाष या पत्र द्वारा दें। कृपया 'वॉयस ऑफ बुद्धा' के नाम ड्राफ्ट या पैसा न भेजें और मनीआर्डर द्वारा भी शुल्क न भेजें। जिन लोगों के पास 'वॉयस ऑफ बुद्धा' नहीं पहुंच रहा है, वे सदस्यता संख्या सहित लिखें और संबंधित डाकघर से भी सम्पर्क करें। आर्थिक स्थिति दयनीय है, अतः इस आंदोलन को सहयोग देने के लिए खुलकर दान या चंदा दें।

सहयोग राशिः

पांच वर्ष :	600 रुपए
एक वर्ष :	150 रुपए

दलित-पिछड़े कब-कब हिन्दू

डॉ. उदित राज

दलित-पिछड़े कब हिन्दू बनते हैं और कब अछूत एवं पिछड़ा, यह सब परिस्थिति पर निर्भर करता है। आर.एस.एस. और भारतीय जनता पार्टी का शोध सबसे गहरा है और वे मतलब के हिसाब से दलितों-आदिवासियों एवं पिछड़ों का स्थान तय करते रहते हैं। हिन्दू और मुसलमान के झगड़े के समय दलितों-पिछड़ों की वे जातियां अचानक हिन्दू हो जाती हैं, जो झगड़ा करने के लिए तैयार हो जाती हैं। जहां ईसाइयों का प्रभाव दिखता है, वहां उन जातियों को ज्यादा हिन्दू बनाने लगते हैं, जिनका झुकाव ईसाइयत के प्रति ज्यादा है। चुनाव के समय वोट की जरूरत पड़ती है, तो सभी को हिन्दू कहने लगते हैं। मीडिया, सभा, सम्मेलन या कोई और अवसर हो हिन्दू एकता की बात प्रमुख हो जाती है।

दूसरी परिस्थिति का आकलन करें तो देखते हैं कि इनका हिन्दू होने का कोई संबंध ही नहीं बनता। शादी-विवाह तो सब अपनी जाति में ही करते हैं। अपवाद के रूप में दलित और पिछड़े सवर्ण लड़की से शादी कर लें तब तो महाभारत की स्थिति पैदा हो जाती है। बहुत सारे मामलों में हत्या तक भी कर दी जाती है। उस समय सवर्ण समाज आवाज नहीं देता कि ये हिन्दू हैं, बल्कि बात उल्टी हो जाती है कि नीच जाति का होकर कैसे सवर्ण समाज की बेटी पर नजर रखा। जब दलितों एवं पिछड़ों को आरक्षण की बात आती है तो ये हिन्दू नहीं रहते बल्कि अयोग्य एवं निकम्मे हो जाते हैं। वी.पी. सिंह जी की सरकार ने पिछड़ों को आरक्षण दिया था तो पूरे देश के अंदर हाहाकार मच गया और इतना ज्यादा सवर्ण समाज आंदोलित हुआ कि उसका फायदा लालकृष्ण अडवानी ने देश भर में रथ घुमाकर लिया। सभी जानते हैं कि यह मंडल के खिलाफ कमंडल का अभियान था। आज वही पिछड़ा भाजपा की रीढ़ की हड्डी बना हुआ है, जिसके हितों के हनन पर ये टिके हुए हैं। सवर्ण तब तर्क दिए कि सीधे नौकरी में आरक्षण देने से प्रशासन पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। अगर इन्हें देना ही था तो पढ़ाई के स्तर पर देना चाहिए था ताकि नौकरी करने की योग्यता हासिल कर लेते। 2006 में जब उच्च शिक्षण संस्थानों में पिछड़ों को आरक्षण दिया गया तब फिर से देश में बहुत बड़ा आरक्षण विरोधी अभियान खड़ा हुआ और फिर कहा गया कि यह तो शिक्षा के स्तर की बर्बादी है।

2014 में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी तो भूल गए कि दलित-पिछड़े सब हिन्दू हैं। कुल 72 मंत्रियों में ज्यादातर ब्राह्मण ही थे। उच्च न्यायपालिका हो, प्रधानमंत्री कार्यालय, उच्च नौकरशाही और मंत्रियों के निजी अधिकारी सभी में शत्प्रतिशत् सवर्ण भागीदारी ही रही तब दलित-पिछड़े हिन्दू नहीं हुए। भाजपा और आर.एस.एस. को समर्थन की बात जब आती है तो मीडिया भी दलितों-पिछड़ों को हिन्दू बना लेती है।

आर.एस.एस. का आज तक सरसंघचालक, सह सरसंघचालक एवं क्षेत्रीय प्रचारक कोई दलित और पिछड़ा नहीं हुआ। इनकी हजारों शाखाएं हैं, जहां पर हिन्दू एकता की बात होती है लेकिन जब भागीदारी की बात आती है, तब ये दलित-आदिवासी एवं पिछड़े ही रह जाते हैं। इस चुनाव में हिन्दू एकता की बात खूब की गयी, लेकिन जब मंत्रिमंडल का गठन होगा तो पता लगेगा कि दलित-पिछड़े हिन्दू नहीं बल्कि नीच, अछूत एवं पिछड़े हैं। अखिलेश यादव की सरकार जब उ. प्र. में रही तो मीडिया को बड़ी पीड़ा होती थी कि जहां देखो थाने के दरोगा यादव ही हैं। वर्तमान में 75 में से 72 डी.एम. ठाकुर व ब्राह्मण हैं तो कहीं चर्चा नहीं हो रही है कि जहां देखो ठाकुर व ब्राह्मण ही हैं।

धार्मिक क्षेत्र का विश्लेषण अगर करें तो चीजें और साफ हो जाती हैं। दलित-पिछड़े अगर सभी हिन्दू हैं तो शंकराचार्य ब्राह्मण समाज से ही क्यों होते हैं। मंदिर के पुजारी क्यों दलित नहीं होते? अगर सभी हिन्दू हैं तो गंदगी और मल-मूत्र साफ करने की जिम्मेदारी एक विशेष जाति को ही क्यों है? दलितों के होटल और रेस्टोरेंट से सामान्य वर्ग के लोग क्यों परहेज करते हैं ? धोखे से भी अगर पता लग जाए कि कारोबार करने वाला दलित-पिछड़ा है तो तथाकथित सवर्ण किनारा करने लगते है, या उनको फेल करने के लिए आपस में जुट जाते हैं। इलाहाबाद के कुंभ मेले में हजारों करोड़ खर्च हुए और सरदार पटेल की मूर्ति में भी हजारों करोड़ रूपये लगे तो देश में चूं तक की आवाज नहीं आयी लेकिन जब मायावती जी डॉ. अम्बेडकर और गौतम बुद्ध के स्मारक सैकड़ों करोड़ के ही खर्च से बनाया तो जहां देखो वहीं पर चर्चा धन की बर्बादी की होती थी।

दलित और पिछड़े अज्ञानी हैं, इसलिए समझ नहीं पाते कि वे कब हिन्दू बनते हैं और कब नहीं। 2014 में चुनाव जीतने के बाद बडखल, फरीदाबाद में सभी सांसदों का शिविर लगा तो मैंने सवाल उठाया कि समतामूलक समाज की बात क्यों नहीं की जाती है? समरस समाज बनाने की बात आर.एस.एस. एवं भाजपा करते हैं, लेकिन समतामूलक समाज नहीं, इससे साफ जाहिर होता है कि जातीय व्यवस्था बनाकर रखना चाहते हैं। जब जरूरत पड़ती है तो इनको हिन्दू बना लेते हैं। इस बार प्रचंड बहुमत से जीते हैं, देखते हैं कि दलितों व पिछड़ों को किस स्तर तक हिन्दू बनाते हैं? हिन्दू तभी बनेगें जब शासन-प्रशासन, रोटी-बेटी और जीवन के सभी क्षेत्रों में बिना जाति की योग्यता के भागीदारी मिले। उपरोक्त के लिए दलितों और पिछड़ों के चमचागिरी करने वाले नेता बुद्धिजीवी भी जिम्मेदार हैं कि वे समाज को जगाने का कार्य नहीं करते हैं, क्योंकि उनके निजी स्वार्थ की पूर्ति होती है।

दलितों के बच्चो का पढ़ना ठीक नहीं लगा इसलिए पूरे परिवार पर हमला

आजमगढ़ में ठाकुर- ब्राह्मणों ने दौड़ा दौड़ाकर पीटा प्रजापति और मौर्या समाज के लोगों को घर में घुस कर चूल्हा बर्तन तोड़-फोड़ दिया गाँव से भगा दिया बीजेपी के लोग इस फसाद में शामिल हैं।

गाँव - मालापुर, महराजगंज, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश में दिल दहला देने वाली घटना हुई इस गाँव में दो तीन घर प्रजापति जाति का है । कुछ घर मौर्य जाति के लोगों का है। निरहु प्रजापति सामान्य से व्यक्ति हैं । वे मेहनत-मजदूरी करके अपने दो बच्चियों को पढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। उनके पास एक बीघा जमीन है। उनका बच्चियों को पढ़ाना-लिखना गाँव के सवर्णो को खटकता था। वो सब कहते थे जवान बेटियाँ घर में रख कर पढ़ा रहे हो। शादी करके हटाओ इन बच्चियों को पढाई से रोकने के लिए कई बार छेड़-छाड़ की जा चुकी थी । उससे भी आगे निशाने पर ठाकुरों की जमीन के बगल में एक बीघा जमीन थी। जिससे हड़पने की कई असफल कोशिश 2017 के बाद से हो चुकी है, इसी बीच निरहु प्रजापति दो कमरे का घर बनवाने के मन से हरिहर मौर्य के खेत में ईंट गिरवाये, हरिहर मौर्य का सवर्णो के साथ उठाना बैठना है। सवर्णो ने उन्हें शाम को दारू पिलाया और चढ़ाया-बढ़ाया की निरहु प्रजापति से कहो कि अभी वो तुम्हारे खेत से ईंट हटाये। हरिहर मौर्य दारू के नशे में गए और वैसा ही कहे, इस पर निरहु ने कहा कि हम रात में नहीं उठाएंगे सुबह हम हटा लेंगे अभी कहा-सुनी हो ही रही थी कि इसी बीच पीछे से सवर्णो से लाठी डंडा से हमला कर दिया निरहु प्रजापति को दौड़ा दौड़ा कर पीटने लगे निरहु प्रजापति के जोर से चिल्लाने पर घर के अंदर से बच्चे और महिलाएं निकलीं उन्हें भी सवर्णो ने दौड़ाकर पीटना शुरू किया।

सभी प्रजापतियों के घरों में घुस कर सभी बच्चों, बुजुर्गो और महिलाओं को पीटते हुए घर का चूल्हा आदि तोड़ फोड़ दिया। इसी बीच किसी सवर्ण ने हरिहर मौर्य पर लाठी से प्रहार करते हुए हाथ तोड़ दिया इस पर वे चिल्लाने लगे जिस पर उनका भतीजा उनके पास पहुंचा उसके भी माथे पर किसी ने लाठी से प्रहार किया और वो बेहोश हो कर गिर गया मौर्या जाति की महिलाएं और बच्चे घरों से निकले तो उन पर भी सवर्णो ने लाठियाँ बरसाना शुरू कर दिया उनके भी घरों में भी घुस कर चूल्हा आदि तोड़ फोड़ दिया गया। कथित रूप से घर फूकने की कोशिश की गई, इस पर बच्चे बुजुर्गो के चिल्लाने और जवान लड़कों द्वारा भाग कर बगल के गाँव के अहिरान में सवर्णो द्वारा हिंसक हमले और घर फूँकने की कोशिश की सूचना पर तुरन्त अहीरों ने लाठी-डंडा और राईफल आदि लेकर उस गाँव पर चढ़ाई की सवर्णो को ललकारा और राईफलों से अंधेरे में फायरिंग शुरू की स्थिति को भाँपते हुए सवर्ण पीछे हटे रात को डरे घबराये प्रजापति और मौर्या लोगों को अहीर सब अहिरान ले गए सुबह सभी लोग गाँव वालों के साथ थाने गए तो पहले से ही सूचना प्राप्त पुलिस ने केश दर्ज करने से मना कर दिया अहीरों और बीएमपी (बहुजन मुक्ति पार्टी) के कार्यकर्ताओं द्वारा लम्बी जद्दो जहद के बाद केस तो दर्ज किया गया लेकिन अज्ञात लोगों के खिलाफ कारण बताया गया कि यह लड़ाई झगड़ा अंधेरे में हुआ है। इसलिए हम अज्ञात लोगों के ही खिलाफ केश दर्ज करेंगे जबकि कई बच्चों और कई महिलाओं, बुजुर्गो का हाथ तोड़ दिया गया है। एक 80 वर्षीय बुजुर्ग महिला के कमर पर ईंट से हमला कर देने से उसकी कमर लगभग टूट गई है। निरहु प्रजापति के सर फूटने और खून निकलने का साक्ष्य साफ था। कई बच्चों और महिलाओं के पीठ पर लाठियों के काले मोठे स्पष्ट निशान हैं जिन्हें महिलाओं ने दिखाया भी लेकिन पुलिस कह रही है कि इसका मेडिकल नहीं हो सकता दरअसल यह सब शासन प्रशासन जनता है। पूरी योजना पहले से ही तय जान पड़ रही है इसलिए कुछ भी नहीं हो रहा है। चिंता की बात है कि सामाजिक न्याय की प्रतिनिधि पार्टियाँ इन जघन्य घटना की थोड़ा भी संज्ञान नहीं ले रही हैं। एक भी नेता मिलने नहीं जा रहा है सबको वोट चाहिए जनता पिटती रहे ..... जो भी साथी आस-पास के हैं वो इन पीड़ित परिवारों की मदद हेतु सामने आयें।

अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ

6 एवं 7 जुलाई को परिसंघ का राष्ट्रीय सम्मेलन दिल्ली में

समाज चाहता है कि उसके लिए नेता लड़े और मैंने वही किया तो भाजपा और आर.एस.एस. ने मेरा टिकट काटकर मुझे वंचित किया कि इस बार भी गलती से मैं संसद में न पहुंच जाऊं। अब यह समाज के हाथ में ही है कि वे मुझे दंडित करने में कामयाब हो पाते हैं अथवा नहीं। यदि मैं समाज के हित में न बोलता तो मंत्री होता, कम से कम टिकट की तो कोई चिंता न होती। बड़े बंगले सहित तमाम तरह की सुख-सुविधाएं और संसाधन होते लेकिन आज परिसंघ का कार्यालय चलाना भी भारी पड़ रहा है। दलित समाज के प्रति मेरा समर्पण एवं संघर्ष को भाजपा ने कभी भी पसंद नहीं किया और उन्होने मेरी आवाज को दबाने की कोशिश की लेकिन मैं अंतिम सांस तक समाज के हित के लिए लड़ता रहूंगा। यद्यपि मनुवादियों ने मुझे संसद के अंदर लड़ाई लड़ने से रोकने का प्रयास किया लेकिन मैं उम्मीद करता हूं कि हमारे लोग मुझे संसद के बाहर लड़ाई लड़ने के लिए साथ देने में पीछे नहीं हटेगें जो ज्यादा लाभप्रद है। देखना है कि अब समाज साथ देता है कि भाजपा एवं आर.एस.एस. मुझे दण्डित करने में सफल होते हैं ? जिन गलतियों के कारण मेरा टिकट कटा उनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं :-

- प्रधानमंत्री की मौजदूगी में संसद में आरक्षण खत्म करने के लिए सुप्रीम कोर्ट और सरकार को कटघरे में खड़ा किया जो शायद कोई न कर सका।
- निजी क्षेत्र में आरक्षण के लिए संसद में बिल पेश किया।
- 2 अप्रैल, 2018 को भारत बंद का समर्थन ही नहीं बल्कि परिसंघ ने इसका नेतृत्व करते हुए पूरे देश में भाग लिया।
- दिल्ली भाजपा द्वारा दलित भोज का विरोध किया और कहा कि यह सब करने से इनका वोट नहीं ले सकते बल्कि इन्हें भागीदारी दो।
- सबरीमाला मदिर में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के साथ खड़ा हुआ और भाजपा ने महिलाओं को मंदिर में प्रवेश का विरोध किया तो मैंने एक अम्बेडकरवादी होने के नाते इसका समर्थन किया।
- गुजरात हाई कोर्ट के न्यायधीश ने आरक्षण व भ्रष्टाचार को देश की बर्बादी का कारण बताया तो संसद में दो बार मैंने ही विरोध किया और अंत में फैसले से वह लाइन हटाया गया।
- 2015 में बंगलौर में भाजपा कार्यकारिणी में ईसाईयों पर अत्याचार का विरोध किया।
- सभी सांसदों एवं नेताओं की मौजूदगी में 2014 में आर.एस.एस. और भाजपा द्वारा समरसता के स्थान पर समतामूलक समाज बनाने की आवाज उठायी।
- सहारनपुर में जेल में बंद चंद्रशेखर उर्फ रावन की रिहाई की मांग संसद में मैंने उठाया, कोई अन्य दलित सांसद ऐसा करने का साहस न कर सका।
- लगातार आरक्षण और खाली पदों पर भर्ती का मुद्दा उठाता रहा।
- मैंने सवाल किया कि लाभ वाले सार्वजनिक उपक्रमों को क्यों बेंचा जा रहा है, इससे सबसे अधिक नुकसान दलितों का ही है
- सरकार द्वारा दलित एवं आदिवासियों के लघु उद्योगों से 4 प्रतिशत वस्तु एवं सेवा की खरीद की योजना को न लागू करने के लिए निरंतर विरोध किया।
- रोहित वेमुला, उना आदि घटनाओं के लिए सरकार की निष्क्रियता पर आवाज उठाई।
- स्टैंड-अप इंडिया के तहत सवा लाख बैंक शाखाओं से दलितों को लोन देकर व्यापारी बनाने की योजना का पर्दाफाश किया। केवल 6 प्रतिशत बैंक शाखाओं द्वारा ही अजा/जजा को लोन दिया गया।
- SCP/TSP प्लान का दर्जा खत्म करके सामान्य कर दिया अर्थात इसके अंतर्गत आबंटित राशि कहीं भी दुरूपयोग की जा सकती है।
- कई बार आवाज उठाई कि उच्च पद जैसे सचिव, कुलपति आदि में दलितों, आदिवासियों एवं पिछड़ों की नियुक्ति क्यों नहीं की जा रही ?
- सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा वजीफा की राशि क्यों रोकी गयी, इससे करोड़ो बच्चों की शिक्षा पर प्रतिकूल असर पड़ा।
- दिल्ली विश्वविद्यालय के नेतृत्व में 13 प्वाइंट रोस्टर के विरोध में विद्यार्थी एवं शिक्षक के विशाल प्रदर्शन का न केवल संबोधन किया बल्कि उनके साथ खड़ा रहा। मोदी जी और अमित शाह के डर से क्या कोई और सांसद ऐसा करने की सोच सकता है ?

विभिन्न स्वतंत्र एजेंसियों के सर्वे के आधार पर सांसद के रूप में उत्कृष्ट कार्यो के लिए मुझे श्रेष्ठ सांसद, बेजोड़ सांसद एवं पूरे देश में द्वितीय सर्वश्रेष्ठ सांसद के रूप में सम्मानित किया गया, जो बहुजन समाज के लिए गर्व की बात है। पिछले 70 सालों शायद कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि ऐसी एजेंसियों द्वारा दलित वर्ग से किसी सांसद का चयन हुआ हो।

मैं चाहता हूँ की काम, नतीजा, योग्यता, ईमानदारी और समर्पण के आधार पर समाज नेता माने। अगर मुझसे अच्छा कोई और काम करने वाला हो तो समाज उसका नाम बताए या मेरा साथ दे। अभी तक भावना, जाति और नाम पर नेता समाज ने माना उसका परिणाम हुआ की आरक्षण लगभग समाप्त हो गया और काम करने वालों का अब भी समाज साथ नहीं दिया तो भूल जाओ कि मान, सम्मान और अधिकार अब बचने वाला है। माला-मादिगा और चमार बनाम मै चमार की लड़ाई से हमारे अधिकार खत्म हो जाएंगें। भाजपा का हिन्दू राष्ट्र का सपना अब साकार हो चुका है। राष्ट्र को किसी से कोई खतरा नहीं है लेकिन ऐसा प्रचारित किया गया कि हमारे लोग भी भावना में आकर ऐसा मान बैठे और राष्ट्र बचाने के नाम पर भाजपा को वोट दिया। यदि हिन्दू राष्ट्र का इनका सपना साकार हुआ तो इसके लिए हमारे स्वार्थी, जातिवादी एवं अहंकारी दलित एवं पिछड़े ही जिम्मेदार हैं।

6 एवं 7 जुलाई, 2019 को सुबह 10 बजे से परिसंघ का दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन मावलंकर हॉल, रफी मार्ग, नजदीक पटेल चौक मैट्रो, नई दिल्ली में आयोजित किया गया है। यदि आप वास्तव में मेरे साथ हैं तो इस सम्मेलन में अवश्य भाग लेगें। शायद यह संविधान एवं आरक्षण बचाने का अंतिम अवसर है। मैं अपेक्षा करता हूं कि आप 6 जुलाई, 2019 को प्रातः 10 बजे साथियों सहित सम्मेलन में पहुचेगें और 7 जुलाई को सायं 4 बजे तक इसमें भाग लेगें। अब तथाकथित उच्च वर्ग के लोगों से संसाधन एकत्रित करके भाग लेने वालों के खाने एवं ठहरने की व्यवस्था कराने में असमर्थ हूं, इसलिए सम्मेलन हेतु 500 रुपये की सहयोग राशि रखी गयी है। अग्रिम सूचना हेतु https://bit.ly/2Dn1Dm0 पर जाकर संबंधित फार्म भरें अथवा राष्ट्रीय कार्यालय में अंकित कुमार (7827720495) या सुमित कुमार (9868978306) से सम्पर्क करें।

- डॉ. उदित राज, राष्ट्रीय चेयरमैन

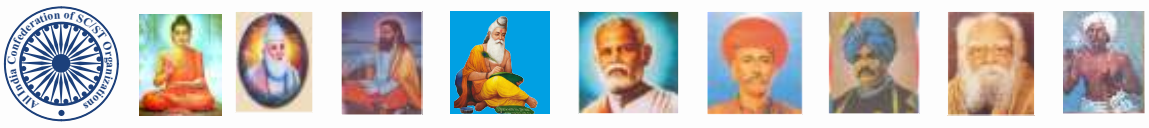

All India Confederation of SC/ST Organisations (Parisangh)

National Convention on 6th & 7th July, 2019 at Mavalankar Hall, Constitution Club, Near Patel Chowk Metro, New Delhi.

Our SC, ST and OBC people want that political leaders fight for them and I tried to fulfil their wish and for this the BJP and RSS punished me by denying the ticket to Lok Sabha,so that I could not reach to the Parliament. Now it is in the hands of SC/STs whether to allow them to punish me. If I had not fought, I could have enjoyed Ministerial position and the ticket would not have been a problem. All possible luxuries and facilities like big bungalow and resources would have been at my command and now it is even becoming diffcult to run Parisangh's office . My commitment and struggles were strongly disliked by the BJP and they decided to silence my voice,but they can not do so till my last breath of life. If Manuvadis have denied the right to fight in the Parliament, I hope my people will give support to fight outside Parliament, which will be more beneficial . Following were important "faults" for denial of the ticket to me:-

Please fill up the form for participation Click **https://bit.ly/2Dn1Dm0**

- In the presence of the Prime Minister, I raised my voice against the Supreme Court,which is killing reservation,and criticized the govt. No MP could have dared to do so.
- Introduced a Private Member Bill in Parliament for reservation in Pvt. Sector.
- Not only supported Bharat Bandh on 2nd April, 2018 but Parisangh participated in it at All India level.
- When Delhi BJP Unit organized Dalit Bhoj, it was challenged by me by issuing the statement that no longer it will help in garnering their votes but they need share in power and governance.
- BJP opposed Supreme Court judgment which empowered women to enter the Sabrimala Temple and as an Ambedkarite, I rose against it.
- A judge of Gujarat High Court held reservation and corruption responsible for backwardness of the country and it was I who raised voice against him strongly in the Parliament,with the result that those lines were expunged.
- In the National Executive meet of BJP at Bangalore, I voiced the concern about attack on Christians.
- In the first meeting of newly elected MPs, in 2014, it was objected by me that why not Samtamulak Samaj (casteless society) instead of Samrasta.
- No MP raised the question to release Chandrashekhar Rawan from the Jail except me.
- Number of times questions were raised at why backlog vacancies were not being filled.
- I questioned why public sector undertakings were being disinvested and sold.
- Why a govt. policy to procure 4% goods and services from SC/ST could never be achieved beyond .4% ,I asked.
- Never failed to raise the questions on atrocities on Dalits,be it Rohit Vemula case or Una or else where.
- Under the policy of stand-up India ,1.25 lacs Bank Branches were to give loans to dalits to become entrepreneurs, but only 6% was achieved.
- SCP and TSP were stripped of special status as a sub-plan and treated as a normal budget so that it did not become binding to incur expenses on SC/STs..
- Why there was no representation as Vice-Chancellors, Secretaries and such important positions from SC, ST, OBCs ?
- Why the Ministry of Social Justice and Empowerment denied scholarships which affected education of crores of SC, ST and OBC students ?
- I participated in various agitations and conferences organized by different organisations like Delhi University Teachers Association and other organisations and parties who opposed 13 point roster and other anti SC/ST/OBC policies. Of course, how could RSS and BJP have tolerated my such actions?

I also became pride for the Bahujan Samaj by becoming bejod saansad(unparalleled MP),Shreshth saansad(best MP) and second best performing MP, as per ratings of various independent agencies.To my mind no one from SC/ST was chosen like this by upper caste agencies in 70 years .

I want that leaders should be chosen on the basis of their work, honesty, results and not on the basis of caste and region,etc. Lesson should be learnt that Mala-Madiga and Chamar vs Non-Chamar fight has nearly finished us.If there is better person than me, I am ready to follow him,otherwise give me full support. The wishes of BJP to have Hindu Raj and save the nation, have been fulfilled now .There was no threat to the nation but even our people were emotionalized to believe it and to vote for the BJP.If Hindu Raj has come back, selfish, casteists, egoists dalits and OBCs are responsible.

With heavy heart, I am giving the call to participate in the National Convention on 6th & 7th July, 2019 at Mavalankar Hall, Constitution Club, Near Patel Chowk Metro, New Delhi. Perhaps this is the last chance to save the Constitution and Reservation and I expect that you will reach on 6th July with some missionary friends at 10 AM and remain till 4 PM of 7th July, 2019. Now I can't afford to get funds from upper castes to arrange food and to incur other expenses for you, so small contribution of 500/- is required.

-Dr. Udit Raj, National Chairman

AlParisangh AlParisangh 9899766443 parisangh1997@gmail.com All India Parisangh www.aiparisangh.com

हिन्दुओं से ही राष्ट्र को खतरा

डॉ. उदित राज

2014 में भाजपा देश के अंदर के मुसलमानों का डर दिखाकर चुनाव लड़ी थी और इस बार बाहर के मुसलमान अर्थात् पाकिस्तान का भय दिखाकर। आज किसी भी रूप में मुस्लिम समाज की भलाई या भागीदारी के लिए कोई कुछ कहे, उसे फौरन राष्ट्रद्रोही का प्रमाण-पत्र जारी कर देते हैं। राष्ट्रवाद की परिभाषा अपने हिसाब से ब्याख्यित कर लिया। अगर इन्हें राष्ट्र की इतनी ही चिंता है, तो सबसे पहले हजारों जातियों में बंटे हिन्दुओं को एक करने के लिए कुछ करना चाहिए। राष्ट्रवाद की मजबूती में अगर सबसे बड़ी कोई अड़चन है तो स्वयं हिन्दुओं में जाति के नाम पर बंटवारा, जितनी जातियां हैं, उतनी राष्ट्रीयता। इन जातियों का धर्म, इतिहास, नैतिक आचार, मूल्य और उद्यम भिन्न हैं।

आर.एस.एस. में आज तक कोई सरसंघचालक, सह सरसंघचालक एवं क्षेत्रीय प्रचारक दलित व पिछड़ा नहीं हुआ है। जब भारतीय जनता पार्टी पर दलितों की कम भागीदारी की बात उठी तो पिछले साल कुछ ऐसे दलितों को राष्ट्रीय कार्यकारिणी में जगह दिया, जिनके पीछे दलितों का समर्थन लगभग शून्य है। लगभग 3 साल पहले प्रधानमंत्री से खुद मैं मिलकर कहा कि उस समय के लगभग 41 प्रदेश प्रभारी में एक भी दलित नहीं था और कार्यकारिणी में भी ढूंढ़ने से नहीं मिला। उन्होंने अनभिज्ञता जाहिर किया कि क्या वास्तव में ऐसा है, फिर भी कोई कदम नहीं उठाया गया। आर. एस.एस. व भाजपा को तो दलित चाहिए, लेकिन नेता नहीं। 20 मई, 2014 को श्री रामनाथ कोविंद स्वयं का बायोडाटा लेकर मुझसे मिलने आए कि उनकी सिफारिश करूं कि पार्टी कुछ जिम्मेदारी दे। हुआ यह था कि 2014 के लोक सभा चुनावों में इनको लड़ाने लायक भी पार्टी ने उचित नहीं समझा था। उसके बाद बिहार के गवर्नर बनाए गए और फिर राष्ट्रपति। कोई भी दलित-आदिवासी अगर जनप्रतिनिधि या कर्मचारी-अधिकारी है तो इस समाज के किसी भी व्यक्ति का अधिकार है कि पूछे कि उनके लिए क्या किया? बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने आरक्षण के लिए इसलिए संघर्ष किया था कि इसका लाभ लेने वाले समाज का उत्थान उनके लिए सर्वोपरि होगा न कि पेट पालना, घर बनाना या धन-संग्रह करना। मैं जब रामनाथ कोविंद जी की बात यहां कर रहा हूं तो एक दलित का दूसरे दलित से संवाद है, न कि एक राष्ट्रपति से । लगभग 500 जजों की नियुक्ति एवं 38 कुलपति बनाए गए। क्या रामनाथ कोविंद जी ने अनुमोदित करते समय चिंता किया कि दलितों व आदिवासियों की भागीदारी कितनी है? संविधान बदलने की बात भाजपा नेता करते रहते हैं, क्या कभी उन्होंने प्रतिक्रिया दी। इस तरह से भाजपा को गूंगे, बहरे दलित चाहिए न कि बोलने वाले। इससे क्या राष्ट्र मजबूत होगा, जब इतनी बड़ी आबादी को अलग-थलग रखा जाएगा? 1990 में जब वी.पी. सिंह जी ने मंडल कमीशन लागू करके पिछड़ों को आरक्षण दिया तो उसके विरुद्ध फूटे गुस्से का फायदा अडवानी जी ने रथ निकालकर उठाया और भाजपा जो 2 सांसदों की पार्टी थी, कहां से कहां पहुंच गयी। क्या ये हिन्दू नहीं थे? मुस्लिम या ईसाई तो नहीं थे। विडंबना है कि पिछड़े ही इनका खेवनहार बने हुए हैं।

आर.एस.एस. और भाजपा को अयोध्या में मंदिर बनाने में कोई रुचि नहीं है। मुद्दा जिंदा रहना चाहिए। एक उच्चस्तीरीय बैठक में मैं स्वयं शामिल था, जिसमें वरिष्ठ आर.एस.एस. के नेता ने कहा कि क्या हम बेवकूफ हैं कि मंदिर बनाएंगें? जब केन्द्र एवं राज्य की सरकार में नहीं थे, तो लोगों से कहते थे कि सरकार में लाओ और अब हैं भी। तीन तलाक को खत्म करके मुस्लिम महिलाओं में असमानता और शोषण खत्म हो, इसकी चिंता तो इन्हें है, लेकिन जब सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया कि सबरीमाला मंदिर में हिन्दू महिलाओं को प्रवेश मिले तब यह कहकर विरोध किया कि रीति-रिवाज और परंपरा में दखल नहीं होना चाहिए, अर्थात् हिन्दू महिलाएं अपवित्र हैं और मंदिर में नहीं जा सकतीं। जहां तक लवजिहाद की बात है तो अगर अनुपात में देखा जाए तो भाजपा और आर.एस.एस. के बच्चों की शादियां ज्यादा मुसलमानों में हुई हैं। दूसरों को कहते हैं कि मुस्लिम अपनी आबादी बढ़ाने के लिए ऐसा कर रहे हैं। जहां तक गौरक्षा की बात है, जिसे ये गऊमाता कहते हैं, मर जाने पर दाह-संस्कार ज्यादातर दलित करते हैं। जितने लोग गाय को अपनी मां मानते हैं, अगर एक-एक गाय अपने घर में रख लें तो कोई भी सड़क और खेत में प्लास्टिक और गंदगी खाने के लिए मजबूर नहीं होगी। इनकी कोशिश रहती है जो दलित एवं पिछड़े मुसलमान बन गए हैं वे फिर से हिन्दू बन जाएं, लेकिन सवाल उठता है कि वापिस आएं तो किस जाति में आएं। आज भी दलितों व पिछड़ों को ये भागीदारी देने को तैयार नहीं। हजारों स्थानों पर मंदिर में प्रवेश वर्जित है और इन पर अत्याचार एवं प्रगति में बाधक शत्प्रतिशत् सवर्ण हीं हैं, न कि मुस्लिम और इसाई अगर इनका घर दुरुस्त होता तो क्यों ईसाई एवं मुसलमान बनते?

मुसलमानों से क्या खतरा है? 16वीं लोक सभा में 72 मंत्री भारत सरकार में थे, इसमें एक मुस्लिम जिसका मंत्रालय महत्त्वहीन था। भारत सरकार के सचिव में एक भी मुस्लिम नहीं हैं और सुप्रीम कोर्ट में के 27 जजों में से सिर्फ एक मुसलमान हैं। सभी चैनल और अखबार के मालिक भी सवर्ण हैं। देश में एक भी मुख्यमंत्री मुसलमान नहीं है और न ही सेना के प्रमुखों में से कोई हैं। अपवाद को छोड़कर देश के बड़े उद्योगपतियों में भी इनकी गिनती नहीं है। शिक्षा और नौकरी के मामले में दलितों से भी कम भागीदारी इनकी है। नौकरशाही व पत्रकारिता में भागीदारी नगण्य है। निजी क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग आदि में भी दूर-दूर तक भागीदारी नहीं नजर आती । इसके बावजूद कहते रहते हैं कि मुसलमानों से हिन्दुओं को खतरा है। यूरोप या अन्य समाज की नकल करते हैं कि वहां पर एक भाषा, एक कानून, धर्म भी एक और नैतिक आचार भी एक है। जब इस परिपेक्ष्य में हिन्दुत्व की ताकतें देखती हैं तो उन्हें लगता है कि मुसलमानों की तमाम ऐसी बातें हैं, जो समान नहीं हैं। अगर इस संकीर्णता से राष्ट्रीयता को परिभाषित करेंगें तो सबसे पहले तथाकथित हिन्दू जनसमूह में एक पहचान बनाएं, जिनकी संख्या 70 प्रतिशत से ज्यादा है। इस तरह से राष्ट्रीयता को खतरा कहीं हिन्दुओं से ज्यादा है। दलितों और पिछड़ों की पहचान विभिन्न मामलों में सवर्णों से भिन्न क्यों है?

मंदिर में दलित की शादी पर ऐतराज क्यों? ऐसी पोस्ट लिखी तो 200 सवर्णों ने दंपति को घर में घुस कर पीटा

गुजरात में वडोदरा की पादरा तहसील के महुवाद गांव में दलित दंपति को एक फेसबुक पोस्ट लिखना भारी पड़ गया। यहां एक दलित शख्स ने दलितों की शादी में मंदिर के इस्तेमाल की सरकार से छूट नहीं मिलने को लेकर फेसबुक पोस्ट लिखी थी। जिसे वहां के उच्च जाति के लोगों ने पढ़ा। वह पोस्ट उन्हें बुरी लगी तो बड़ी संख्या में एकत्रित होकर उच्च जाति के लोग दलित के घर आ धमके। दलित शख्स की बीवी का कहना है कि 200 से ज्यादा लोगों की भीड़ ने मेरे पति को पीटा।

दलित महिला ने 11 लोगों के खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई इस मामले में पुलिस ने 11 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। वहीं, फेसबुक पर पोस्ट करने वाले दलित युवक के खिलाफ विभिन्न समुदायों के बीच दुश्मनी बढ़ाने का मामला दर्ज किया गया है। जानकारी के मुताबिक, तारुलताबेन मकवाना नाम की दलित महिला ने भीड़ द्वारा घर पर हमला करने, पथराव करने, पति प्रवीण मकवाना की पिटाई और धमकाने को लेकर वाडु पुलिस थाने में 11 लोगों और अज्ञात लोगों की भीड़ के खिलाफ यह एफआईआर दर्ज कराई है, जिसमें 200 से ज्यादा लोगो द्वारा घर पर हमला किए जाने का आरोप लगाया गया है। पीड़िता ने कहा है कि, डंडे-पाइप और अन्य हथियार लिए लोगों की भीड़ उनके घर पर पहुंची और हमें गालियां देनी शुरू कर दीं। जैसे ही मैं घर से बाहर निकली, लोग मुझे थप्पड़ मारने लगे। बाद में भीड़ घर में घुसी और पति प्रवीण को खींचकर घर से बाहर निकालकर उनकी पिटाई कर दी।

इन लोगों के खिलाफ हुई एफआईआर महिला ने आगे कहा कि लोगों ने मेरे पति को धमकी देते हुए कहा कि यदि उन्होंने अपनी फेसबुक पोस्ट डिलीट नहीं की तो इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। एफआईआर में महिला ने महुवाद के चौतन्य सिंह झाला, मयूर सिंह झाला, महेश जाधव, दिलीप सिंह राजपूत, संजय सिंह परमार, अर्जुन परमार, नरेश परमार, अरविंद परमार, दिलीप परमार, किशन परमार और अजय परमार समेत 11 लोगों का नाम दिया है। हिंसा की आशंका के चलते पुलिस ने किया बंदोबस्त पुलिस के मुताबिक, 20 मई की घटना को लेकर दोनों समुदायों के बीच समझौता नहीं होने के बाद महिला ने गुरुवार को पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। आईपीसी की धारा 143, 147, 149, 452, 336, 323, 504, 506 और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की संबद्ध धाराओं के तहत मामला दर्ज किया है। शिकायत दर्ज होने के बाद 24 घंटे गश्त करनेवाले दल को तुरंत गांव भेजा गया। लेकिन अभी तक कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है। हालांकि गांव में तनाव का माहौल छाया है और हिंसा की आशंका के चलते पुलिस को तैनात किया गया है।

शिकायत की सत्यता साबित नहीं होने के कारण कोई भी गिरफ्तारी नहीं हुई पुलिस मामले की जांच कर रही वडोदरा ग्रामीण पुलिस ने कहा, हम इस बारे में गांव वालों और प्रत्यक्षदर्शियों के बयान दर्ज कर रहे हैं। फिलहाल पुलिस प्रवीण द्वारा किए गए दावों की सत्यता का पता लगा रही है, कि गांव में दलितों की शादी समारोह के लिए मंदिर में व्यवस्था नहीं किए जाने की बात सही है या नहीं। लेकिन अभी तक किसी ने इस बारे में बात नहीं की है। जिसके चलते अबतक एफआईआर में दर्ज लोगों में से किसी की गिरफ्तारी नहीं की गई है।

https://hindi-oneindia-com/news/rajkot/dalit&couple&attacked&thrashed&by&over&200&upper&caste&men&over&facebook&post/articlecontent&pf199502&508742-html

दलित की बारात पर किया था पथराव, 43 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज

घोड़ी की मौत के बाद पुलिस मे उच्च जाति के 43 लोगों के खिलाफ आईपीसी की धारा 429 के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

गुजरात में कुछ समय पहले एक दूल्हे की बारात पर उच्च जाति के लोगों ने पथराव कर दिया था। अरावली जिले के मोदासा तहसील के खाम्बीसार गांव में हुई थी। बारात पर हुए इस पथराव में दूल्हे की घोड़ी को भी काफी चोट लगी थी जिससे वह घायल हो गया था, अब उस घोड़ी की मौत हो गई है। घोड़ी की मौत के बाद पुलिस मे उच्च जाति के 43 लोगों के खिलाफ आईपीसी की धारा 429 (पशु क्रूरता) के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

बारात में घोड़ी पर किया पथराव

इंडियन एक्सप्रेस में छपी खबर के मुताबिक पुलिस ने बताया कि 12 मई को दलित समुदाय से आने वाले जयेश राठैर की शादी थी। रीति-रिवाज के मुताबिक बारात के लिए घोड़ी का भी इंतजाम किया गया था. बताया जा रहा है कि गांव में किसी दलित के घोड़ी मांगने का ये पहला मामला था. जिसके बाद ऊंची जाति के लोगों ने बारात पर पथराव कर दिया जिसमें घोड़े को भी चोटें आईं।

पीड़ितों की मानें तो आरोपियों ने बारात को रोकने के लिए बीच रास्ते में हवन करना शुरू कर दिया। जब बारात वहां से गुजरने लगी तो उन लोगों ने पत्थर फेंकने शुरू कर दिये। पुलिस ने इस मामले में आईपीसी के अलावा एससी/एसटी एक्ट के तहत केस दर्ज किया था। पूरे मामले में 16 महिलाओं और 27 पुरुषों को आरोपी बनाया है। सभी आरोपी पाटीदार समुदाय से ताल्लुक रखते हैं।

एफआईआर को झूठा बता रहे हैं आरोपी दूल्हे जयेश राठैर के वकील ने इंडियन एक्सप्रेस को बताया कि आरोपियों की जमानत याचिका दाखिल की थी जिसे अदालत ने खारिज कर दिया है। यही नहीं आरोपी एफआईआर को भी झूठा बता रहे हैं। वकील ने कहा कि पुलिस सुरक्षा में बारात निकलने के बाद भी बारात पर हमला किया गया। जिससे घोड़ी घायल हो गई और अब उसकी मौत हो गई। जिसके बाद उनकी जमानत खारिज हो गई।

https://hindi.news18.com/news/nation/horse-used-in-dalit-wedding-dead-after-stone-pelting-injuries-gujarat-2046718.html

मैं गर्व से कहती थी कि मैं डॉ. पायल की मां हूं, पर अब मैं क्या कहूं?

प्रवीन ठाकरे/जान्हवी मुले

ये कहते हुए आबेदा तड़वी अपनी आंखों के आंसू रोक नहीं पाईं. पिछले हफ्ते 22 तारीख को हुई डॉ. पायल की आत्महत्या के सदमे से वो अब तक बाहर नहीं आ पाई हैं। उनकी 26 साल की बेटी मुंबई के नायर अस्पताल से जुड़े टोपीवाला मेडिकल कॉलेज से एम.डी कर रही थीं। डॉ पायल पढ़ाई पूरी करने के बाद आदिवासी इलाकों में जाकर काम करना चाहती थीं। पायल की मां बताती हैं, वो मेरा सहारा थी, मेरा ही नहीं हमारे पूरे समाज का। क्योंकि वो हमारे समाज की ऐसी पहली महिला थी जो एम.डी डॉक्टर बनने वाली थी।

हमारा विश्वास था कि पायल हमारे समाज की कमियों को पूरा कर देगी. लेकिन हमारा ये सपना अधूरा ही रह गया। पायल के घरवालों का कहना है कि तीन सीनियर महिला डॉक्टर्स ने उनकी रैंगिग की और उनका हैरेसमेंट करते वक्त जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल किया जिससे तंग आकर उन्होंने ये कदम उठाया।

होशियार, महत्वाकांक्षी और सेवाभावी : इस हादसे के बाद उनके जलगांव के घर में लोगों ो आना लगातार बना हुआ है। घरवाले, पड़ोसी और आस-पास गांव के लोग इस घटना पर अपना दुख व्यक्त कर रहे हैं। पायल को याद कर के वें भावुक हो जाते हैं। उनमें से कुछ लोगों ने हमसे बात की। आबेदा बताती हैं, पायल बहुत होशियार लड़की थी उसको दसवीं में 88 प्रतिशत मार्क्स मिले थे। उसने बहुत मेहनत से मेडिकल की पढ़ाई की थी और बहुत कम समय में कई लोगों का इलाज भी किया था। पायल का छोटा भाई जन्म से ही विकलांग हैं। उसको देख कर ही पायल को डॉक्टर बनने की प्रेरणा मिली। लोगों की सेवा करना ही उनका उद्देश्य था।

अपने पहले ही स्टाईपेंड से उन्होंने कुष्ट रोगियों की मदद की थी। चार महीने के लिए मैंने उसे आदिवासी इलाके में काम करने के लिए कहा था तब जो भी मरीज आता था वो पायल से ही इलाज कराने के लिए कहता था। आदिवासी इलाके में काम करने के दौरान पायल को मुंबई के टोपीवाला मेडिकल कॉलेज में एमडी के लिए ऐडमिशन मिला। पायल के पति डॉ. सलमान तड़वी मुंबई के ही कपूर मेडिकल कॉलेज में असिटेंट प्रोफोसर का काम करते हैं। पायल के सपनों का वे खूब समर्थन करते थे। जब पायल मुंबई चली गईं थी तो काम की वजह से बातचीत थोड़ी कम हो गई थी।

सीनियर्स पर आरोप :पायल ने अपनी मां को बताया था कि मेडिकल कॉलेज के तीन सीनियर डॉक्टर्स उन्हें परेशान करते हैं। वो कहती थी मां ये तीन लोग मुझे मरीजों के सामने छोटी-छोटी वजहों से अपमानित करते हैं। फाइल मुंह पर फेंकते हैं, टिफिन भी खाने नहीं देते। भिल्ल समाज की पायल को उनकी जाति पर ताने दिए जाते थे। ऐसा आबेदा बताती हैं। आबेदा कैंसर की मरीज हैं जिस दौरान ये सब हो रहा था उसी दौरान अस्पताल में उनका आना-जाना होता था। लेकिन वे पायल से मिल नहीं पाती थीं। मेरे हॉस्पिटल आने के बाद मुझे ऐसा लगता था कि अब बेटी से मिलके जाउं, पर वो काम में व्यस्त रहती थी इसलिए मैं उसे दूर से देखकर ही लौट आती थी। आबेद बताती हैं, बेटी के साथ हो रहे इस तरह के बर्ताव को लेकर मैं कम्प्लेंट करना चाहती थी लेकिन पायल ने ही मुझे रोक दिया था। पायल अपनी मां से कहती थीं, मां तू कम्प्लेंट मत करना, वो लोग भी यहां पढ़ने के लिए आएं है उनके मां-बाप की भी उनसे कुछ उम्मीदे हैं फिर ऐसा करने से मेरी भी परेशानी

बढ़ेगी।

इसके बावजूद पायल की मां और पति सलमान ने पायल के सीनियर्स की शिकायत कॉलेज से की थी। उन्होंने आग्रह किया था कि पायल की यूनिट बदल दी जाए। उसके बाद पायल को कुछ समय के लिए दूसरी यूनिट में भेज दिया गया था, तब उन्हें लगा था कि अब प्रेशर कुछ कम हो गया है। लेकिन उन तीन सीनियर्स का वैसा ही बर्ताव फिर शुरु हो गया था। तब 10 से लेकर 12 मई को पायल की मां और पति लिखित शिकायत लेकर कॉलेज विभाग के पास गए लेकिन उनको गंभीरता से नहीं लिया गया। इसके लगभग 10 दिन बाद ही पायल ने आत्महत्या कर ली।

मेडिकल कॉलेज की भूमिका : पुलिस और टोपीवाला मेडिकल कॉलेज प्रशासन इस घटना की जांच कर रहे हैं। कॉलेज ने एंटी रैंगिग समिति गठित की है जो जल्द ही इस मामले की रिपोर्ट पेश करेगी। ऐसा कॉलेज के डीन डॉ रमेश भारमल का कहना है। भारमल कहते हैं, हम बहुत शॉक में थे। जिस रात पंचनामा हुआ उस रात पांच घंटे हम वहीं पर थे। ये सब कैसे हुआ? हमें क्या करना चाहिए था? अब आगे क्या करना है? इस पर चर्चा कर रहे थे। पायल एक सीधी और होशियार लड़की थी। वो ऐसा कदम उठाएगी ऐसा किसी को नहीं पता था। इसे (रैगिंग) आसानी से रोका जा सकता था। पायल के जाने के बाद डॉ भारमल हमसे मिलने आए थे ऐसा सलमान बताते हैं। उन्होंने हमसे कहा कि इस बात की सूचना आपने मुझे क्यों नहीं दी? सलमान ने जवाब दिया, सर आपको बताने से पहले हमने डिपार्टमेंट से बात की कोई चीज स्टेप-बाई-स्टेप होनी चाहिए हम सीधे आपके पास कैसे आ सकते थे। हम स्टेप-बाई-स्टेप गए लेकिन उन लोगों ने कोई एक्शन नहीं लिया। आबेदा मेडिकल कॉलेज से गुस्से में सवाल करती हैं, मैंने इसकी शिकायत की थी। इसमें हमें और क्या करना चाहिए था? वो यहां रात-दिन रहते हैं उनको ये बातें कैसे नहीं पता चलीं? ये सब उनकी आंखों के सामने ही हुआ। लेकिन उन्होंने इस पर ध्यान ही नहीं दिया। पुलिस अभी उनकी सहायता कर रही है लेकिन पुलिस के ऊपर दबाव आ सकता है ऐसा उनका डर है। वो कहती हैं, हजारों पायल अभी पढ़ाई कर रही हैं उनका भी भविष्य है उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी प्रशासन की है लेकिन मेरी बेटी की सुरक्षा प्रशासन ने नहीं की। प्रशासन ने ही मेरी बेटी की जान ली है।

आरोपी सीनियर्स का क्या कहना है ?

जिन तीन सीनियर्स पर रैंगिग और हैरासमेंट के आरोप लगे हैं उन्हें महाराष्ट्र के रेजीडेंट डॉक्टर संघ (एमएआरडी) ने निलंबित कर दिया है। तीनों सीनियर्स ने इस मामले में खत लिख कर अपना पक्ष एमएआरडी के सामने पेश किया है। आत्महत्या की सही वजह अभी तक पता नहीं चली है। हमें इस मामले में दोषी ठहराना और हम पर अट्रॉसिटी लगाना अन्याय है काम के प्रेशर को कोई रैंगिग कहे तो इस तरह की रैंगिग हमारी भी हुई है मेडिकल कॉलेज की निष्पक्ष जांच करनी चाहिए। लेकिन पुलिस और मीडिया प्रेशर के कारण कोई हमारा पक्ष सुन ही नहीं रहा है।

पायल के लिए न्याय की गुहार पायल के सहकर्मी और विद्यार्थी संगठनों ने न्याय की गुहार की है कुछ संगठनों ने कॉलेज के बाहर प्रदर्शन किया। पर इस दुख के साथ पायल की मां को एक और बात की चिंता सता रही है, मेरे भाई की बेटियां अभी बारहवीं क्लास में हैं और सांइस की पढ़ाई कर रही हैं अगले साल वें भी हॉस्टल में रहेगीं। अब उनको हॉस्टल भेजे या न भेजे इस बात की भी चिंता हैं।

https://www.bbc.com/hindi/india-48432578?fbclid=IwAR1297KkTBy0vTS4CREN6rfZuZWxyaND8utS0-FzhM8LJSBY7IdNHHzpwjg

✦✦✦

यूपीः नाबालिग दलित लड़की को सामूहिक बलात्कार के बाद जिंदा जलाया, सात के खिलाफ केस दर्ज

यह मामला उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर का है। आरोप है कि एक ईंट-भट्ठा के मालिक और छह अन्य लोगों ने वहां काम करने वाली नाबालिग दलित लड़की के साथ सामूहिक बलात्कार किया और सबूत मिटाने के लिए उसे जिंदा जला दिया।

उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में एक नाबालिग दलित लड़की से कथित तौर पर सामूहिक बलात्कार के बाद उसे जिंदा जला दिया गया। इस मामले में पुलिस ने सात लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है। आरोपियों की तलाश जारी है। इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के मुताबिक, उत्तर प्रदेश पुलिस ने मुजफ्फरनगर जिले में 14 साल की दलित लड़की का कथित तौर पर बलात्कार करने और उसे जिंदा जलाने के मामले में सात लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया है। पुलिस का कहना है कि लड़की का शव बीते शुक्रवार को जली हुई अवस्था में एक ईंट-भट्ठे के पास से बरामद किया गया। लड़की इसी ईंट के भट्ठे में काम करती थी। पुलिस के मुताबिक, पोस्टमार्टम रिपोर्ट से पता चला है कि लड़की की मौत जलने और दम घुटने से हुई है। अभी इस मामले में किसी की गिरफ्तारी नहीं हुई है, पुलिस का कहना है कि फिलहाल हम सबूत जुटाने में लगे हैं। क्षेत्र के सर्कल ऑफिसर के मुताबिक, 'पीड़िता के पिता की शिकायत के आधार पर ईंट-भट्ठा के मालिक और छह अन्य के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। इन लोगों पर सामूहिक बलात्कार, हत्या और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति अत्याचार अधिनियम की धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। बलात्कार के आरोपों की अभी पुष्टि नहीं हुई है लेकिन जांच लंबित है और सबूतों के आधार पर ही गिरफ्तारियां की जाएंगी।' पीड़िता के पिता के मुताबिक, 'वह अपनी पत्नी के साथ दवाइयां लेने के लिए एक दिन के लिए गांव से दूर गए थे। अगली सुबह उन्हें पता चला कि उनके घर में उनकी बेटी का शव जली हुई अवस्था में मिला है।'

मुजफ्फर नगर में एक दलित लड़की का रेप करने के बाद जलाकर मार दिया गया। क्या यह हिन्दू नहीं थी ?

- डॉ. उदित राज

पुलिस का कहना है कि परिवार को शुरुआत में सामूहिक बलात्कार का संदेह नहीं था लेकिन रविवार को ईंट-भट्ठा के मालिक और अन्य अनाम आरोपियों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। परिवार का कहना है कि उनकी गैरमौजूदगी में बेटी का बलात्कार किया गया और बाद में उसे जलाकर मार दिया गया। लड़की की चप्पलें और कुछ कपड़े घटनास्थल से बरामद हुए हैं। पुलिस का कहना है कि राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग ने इस मामले का संज्ञान लिया है। मजिस्ट्रेट के सामने पीड़िता के पिता का बयान दर्ज किया जाएगा। लड़की के पिता ने कहा, 'मैं शुक्रवार शाम को गया था और मेरे बच्चे ईंट-भट्ठा के पास बनी झुग्गी में सो रहे थे। मेरी बेटी अंदर सो रही थी जबकि बेटा झुग्गी के बाहर सो रहा था। प्रशासन इस मामले को इस तरह पेश करने की कोशिश कर रहा है कि उसकी मौत दुर्घटनावश हुई, जो गलत है। इलाके में काम करने वाले लोग उसे उठाकर ले गए और बलात्कार के बाद उसकी हत्या कर दी गई।' सूत्रों का कहना है कि शव की ली गई तस्वीरों से पता चलता है कि लड़की के टखने पर रस्सी के निशान थे। उन्होंने कहा, 'कमरे के भीतर कपड़ों का ढेर लगा था, जिसे देखकर लगता है कि इस घटना को दुर्घटना की तरह दिखाने के लिए कपड़ों को इकट्ठा कर आग लगाई गई। कमरे में बिजली नहीं थी। ऐसा कोई भी सामान नहीं था, जिससे आग लग सके तो आग लगी कैसे?' उन्होंने कहा, 'हर कोई जानता है कि क्या हुआ लेकिन सब चुप हैं। जो कोई भी बोलना चाहता है, उसके ऊपर बहुत दबाव है।'

https://www.bbc.com/hindi/india-48440280?ocid=socialflow_facebook&fbclid=IwAR3-Qd57WXfumkqJOuN_G0-gfpyoIwbFl601fBqy7c-V7VMSbokHepcFe8k

VOICE OF BUDDHA

Publisher : Dr. UDIT RAJ (RAM RAJ), Chairman - Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42

● Year : 22 ● Issue 11 ● Fortnightly ● Bi-lingual ● Total Pages 8 ● 16 to 31 May, 2019

The Dalit and Backwards become Hindu according to need

Dr. Udit Raj

The Dalits and the backwards are sometimes considered Hindus and sometimes untouchables and backward, it all depends on the situation. The research by RSS and the Bharatiya Janata Party's is very deep and they decide the place of Dalits-Tribals and Backwards according to their self interest. At the time of the Hindu - Muslim quarrel, those castes of Dalits and backward who are ready to fight suddenly become Hindus. Certain places where the impact of Christians is seen, then those castes whose tendency is more towards Christianity are called Hindus. When votes are required at the time of election, then everyone seems to be a Hindu. Everywhere in Media, gatherings, conferences or any other occasions become the stages of Hindu unity.

In other situation, we can see that there is no connection between them being a Hindu. Everyone marries in its own caste. As an exception, if a Dalit or backward marries an upper caste girl, then situation of Mahabharata arises. In many cases, it has reached levels of killing. At that time, the upper castes do not say that they are also Hindu, but the thing take another angle that how dare the boy from lower caste thought of marrying the daughter of upper caste. When it comes to reservation for Dalits and Backwards, then these people are treated inefficient and scrawny instead of Hindu. When the government under Shri. V P Singh gave reservation to the backwards and Dalits, there was a furor inside the entire country and the upper caste agitated so much that Shri L.K. Advani took advantage of the situation by starting a chariot ride across the country. Today these backwards are the only backbone of the BJP, whose interests are being struck down again and again. The upper caste argued that giving reservation directly in jobs will adversely affect the administration and instead they should be given reservation at level of education so that they achieve the skills and knowledge required for the jobs. In 2006, when reservation was given to backwards in higher educational institutions, then again a huge anti-reservation campaign started in the country and it was said that it is a waste of education system.

In 2014, when the Bharatiya Janata Party came to power at the centre, then they forgot that the Dalits and Backward are also Hindu. Out of the 72 central ministers mostly were Brahmins. In the higher judiciary, the Prime Minister's office, the higher bureaucracy and the private secretaries of the ministers, all positions were fulfilled from the upper castes, then these Dalits and backwards

were not considered Hindus. When it comes to the support of BJP and R.S.S, then the media also makes the Dalits and the backward, Hindus.

Till date neither the Sarsanghchalak, nor the regional campaigners of RSS have been from a Dalit or Backward caste. It has thousands of branches where there are talks of Hindu unity, but when it comes to participation, then the dalit-tribal and backward remains dalit-tribal and backward only and not a Hindu any more. In this election, Hindu unity was talked about, but when the cabinet was formed, it can be seen that Dalit-backward are not considered as Hindus but only low, untouchables or backwards. In times of Akhilesh Yadav's government the media was in great pain seeing most of the SHOs of police station were Yadavs. Currently when 72 DMs out of total 75 are Thakurs and Brahmins then there is no such discussion about it.

If we analyze the religious field deep, things become clearer. If all the Dalit and backward are Hindus, then why do Shankaracharya belong to Brahmin society only? Why are not the priests of the temple from dalit community? If all are Hindu, then why is the responsibility of cleaning dirt and stool given to a special caste only? Why do people of the common class avoid the Dalit hotels and restaurants? If it is known by chance that a trader is dalit or backward, then the so-called upper caste traders try to part ways or try to fail the business of the Dalit trader. Thousands of crores of rupees were spent in the Kumbh fair of Allahabad and thousands of rupees were spent in construction of Sardar Patel's statue, but when Mayawati Ji spent money on Memorials of Ambedkar and Gautam Buddha then there were discussion on waste of money everywhere.

The Dalits and backward are ignorant, therefore they can not understand when they are made Hindus and when not. After winning the election in 2014, all winning MPs organized a camp in Badkal, Faridabad, where I raised the question that why the issue of the equalizer society is not raised or discussed? RS.S. and the BJP want to have a Samaras society, but not the equalizer one, which clearly shows that they want to maintain ethnic system. When there is a need, they are made Hindu. This time the BJP has won with a huge majority, lets see that till which level the Dalits and the backward are made Hindus? They will become Hindu only when they get equal opportunities in all walks of life without discrimination on basis of caste. For the above issues, all the intellectuals and ministers from the backward and Dalit community, are also responsible because they do not work to awaken the society, but to fulfill their personal interest.

✦✦✦

Appeal to the Readers

You will be happy to know that the **Voice of Buddha** will now be published both in Hindi and English so that readers who cannot read in Hindi can make use of the English edition. I appeal to the readers to send their contribution through Bank draft in favour of **'Justice Publications'** at T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001. The contribution amount can also be transferred in 'Justice Publications' Punjab National Bank account no. 0636000102165381 branch Janpath, New Delhi, under intimation to us by email or telephone or by letter. Sometimes, it might happen that you don't receive the Voice of Buddha. In that case kindly write to us and also check up with the post office. As we are facing financial crisis to run it, you all are requested to send the contribution regularly.

Contribution:

Five years	:	**Rs. 600/-**
One year	:	**Rs. 150/-**

Publisher, Printer and Editor - Dr. UDIT RAJ (FORMERLY KNOWN AS RAM RAJ), on behalf of Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42, Telefax:23354843, Printed at Sanjay Printing Works, WZ-4A, Basai Road, New Delhi.
Website : www.uditraj.com E-mail: parisangh1997@gmail.com Computer typesetting by Ganesh Yerekar